

सभी अभी अपनी किस्मत, अपनी परिस्थिति, अपने ऊपर भगवान की कृपा की कमी, और और बातों को लेकर अपने को कोसे जा रहे हैं। शायद मेरा कोई पिछला कर्म होगा, कोई ऐसा कर्म होगा जिसके कारण मेरे साथ ऐसा हो रहा है। मेरे साथ ही ऐसा क्यों है आखिर! या तो कोई अच्छे या बुरे कर्म का फल हमें मिल रहा है। इन प्रश्नों से सभी भरे हुए हैं...। इस सिद्धान्त को, इस लॉ को हमें अच्छी तरह से समझना है। आपको हम थोड़ी देर के लिए हल्का कर देते हैं कि जो कुछ भी आपके साथ हो रहा है, उसको बहुत गहराई तक जाकर समझना होगा।

वजह क्या है

यदि इसे हम Theoretically नहीं, Practically, Realistically, Actually समझना चाहें तो हम कह सकते हैं कि हम तीन स्तरों (Level) पर कर्म कर

कर्म का सिद्धान्त...

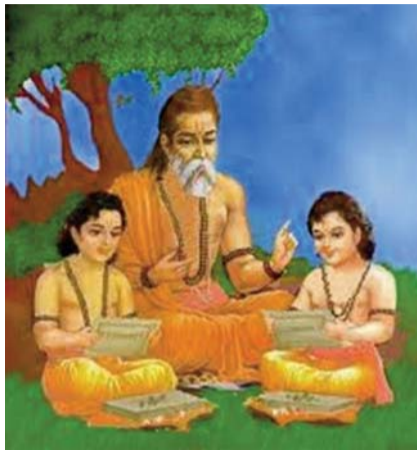
रहे हैं। पहला, शरीर के साथ, दूसरा, बोलकर, तीसरा सोचकर।

इसको हम आपको Real Life example के साथ समझाना चाहेंगे।

जैसे किसी व्यक्ति ने, किसी दूसरे व्यक्ति का हाथ पकड़कर जिसकी आँख पर पट्टी बंधी हो, से वह तीसरे व्यक्ति को चाकू मार देता है, तो तीसरा व्यक्ति जो यहाँ खड़ा था, चुपचाप, जिसके साथ यह घटना हुई, उसने कुछ सोचा, नहीं ना! वह तो चुपचाप खड़ा था। यदि उसने यह सोचा होता कि मुझे suicide करना है, तब कोई उसे मार देता, तो हम कह

सकते हैं कि उसके कर्म की वजह से यह हुआ। आप देखिए, यहाँ कर्म कोई और कर रहा है, सोचा किसी और ने, मरा कोई और! क्या अजीब स्थिति है।

अब जिस काम के पीछे, कोई मोटिव (motive) है, कोई Intention है, कोई लालच है, कोई इच्छा है, वो तो कर्म है, यदि जिस काम के पीछे आपका कोई भी उद्देश्य नहीं है, कोई



Intention नहीं है, या फिर जो काम आप जान-बूझकर नहीं करते हैं, कर्म नहीं अकर्म है।

हमारे इस शरीर में एक साथ

अरबों Function चल रहे हैं, काम कर रहे हैं, वो तो अपने आप चल रहे हैं ना! सांस अपने आप चल रही है, क्या वह आपका कर्म है, नहीं। डायजेशन (Digestion) अपने आप हो रहा है, क्या वह आपका कर्म है, नहीं। लेकिन जैसे ही आपने Intentionally सांस लेना शुरू किया, जानबूझकर प्राणायाम करना शुरू किया, स्वस्थ होने के लिए अथवा परिणाम के लिए। कभी धीरे तो कभी तेज़, अब वो आपका कर्म है। जिसकी वजह से आपको फल मिलने वाला है। जहाँ भी आप जानबूझकर कोई कर्म कर रहे हो, अर्थात् जहाँ आपकी अवेयरनेस है वो आपका कर्म है।

“अच्छा कर्म/बुरा कर्म”

किसी भी कर्म के पीछे मेरा Intention उद्देश्य क्या है। यदि मेरा Intention या मेरा motive किसी को मारकर पैसा लेना है, यदि मैंने पैसा लिया, तो वह बुरा कर्म है, लेकिन वो मरते-मरते बच भी गया तो भी बुरा कर्म है। और यदि मैं एक डॉक्टर हूँ, मेरा Intention

बचाने का है। यदि मैं किसी का ऑपरेशन करता हूँ, मेरा उद्देश्य बचाना है, लेकिन वह मरीज मर

जाता है, तो भी वह कर्म अच्छा कर्म है। यहाँ सारा खेल कर्म करने से पहले उसके Intention का है, Outcome का नहीं। यहाँ कर्म का फल कुछ, बीज का फल कुछ। अर्थात् बाहर जो हो रहा है, उसका नहीं, बल्कि अन्दर जो हो रहा है, उसका खेल है।

जो खेल आपके अंदर शुरू हुआ है, उसी से या तो दुःख या फिर सुख मिलता है। उद्देश्य सही, आपका motive सही तो आप चेतना के स्तर से ऊपर उठ रहे हैं, नहीं तो बस लालच व बुरी भावना के वश नीचे गिरते जा रहे हैं।



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

प्रश्न:- बाबा हमेशा कहते हैं कि बाप के दिलतख्तनशीन रहो। कौन बैठ सकते हैं बाबा के दिल पर और हम कैसे समझें कि हम दिलतख्तनशीन हैं या नहीं?

उत्तर:- भगवान के दिल पर राज्य करना - सोचकर ही कितना आनन्द आता है। इसका अर्थ है हमें वे बहुत प्यार करते हों, वे हमें चाहते हों, वे हमारा हमेशा ध्यान रखते हों। यह फीलिंग अंदर ही अंदर आयेगी। कई ये सोचकर परेशान रहते हैं कि शायद बाबा के दिल पर तो वही हैं जो साकार में उनसे स्टेज पर मिलते हैं। वे कभी-कभी यह भी देखते हैं कि स्टेज पर तो बाबा उन्हें बहुत प्यार कर रहा है जिनकी स्थिति निम्न स्तर की है, तो कईयों के बहुत संकल्प चलते हैं। परन्तु नहीं, वे तो प्यार के सागर हैं, सबको ही प्यार करते हैं। देखना ये है कि जिन्हें वे प्यार करते हैं, उनके प्यार का रिसपांस वे क्या करते हैं? यदि वे ईश्वरीय आज्ञाओं पर पूर्णतया नहीं चलते तो प्यार के सागर का प्यार भी उनका कल्याण नहीं कर सकता। घर बैठे ही आपको बाबा का प्यार अनुभव होगा, उनकी मदद अनुभव होगी, उनकी दृष्टि अनुभव होगी। अमृतवेले सुखद अनुभूति होगी, मुरली से उनका

प्यार अनुभव होगा। ये है सच्चा प्रभु प्यार। भगवान के दिल पर चढ़ने वालों की तीन धारणाएं होंगी। प्रथम तो उन्होंने बाप को अपने दिल में बिठाया होगा, इसका अर्थ है कि वे योगयुक्त होंगे। दूसरा वे मास्टर सर्व-शक्तिवान के नशे में रहेंगे और तीसरा उनकी स्थिति श्रेष्ठ होगी। श्रेष्ठ स्थिति अर्थात् वे सदा एकरस प्रसन्न रहेंगे, उनके मूड नहीं बदलेंगे, वे क्रोध नहीं करेंगे, वे परेशान नहीं होंगे और वे हर परिस्थिति में शांत व अचल अडोल रहेंगे।

प्रश्न:- बाबा को मिलने के बाद मेरे जीवन में सुख-शांति आ गई। मेरी जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई। परन्तु मेरे

परिवार में अभी भी अशांति बनी रहती है, कोई न कोई विघ्न आते ही रहते हैं। मैं इनसे मुक्ति का उपाय जानना चाहता हूँ? **उत्तर:-** आप यदि अमृतवेले उठकर बहुत पावरफुल योग करेंगे तो आपके घर के अनेक विघ्न हट जायेंगे। घर को निर्विघ्न व सुख-शांति सम्पन्न बनाने के लिए घर के वायब्रेशन्स को खुशी व प्रेम से भरना आवश्यक है। जिस परिवार में खुशी व प्रेम होगा, वहां आपदाएं विपदाएं ठहरेंगी ही नहीं। खुशी के लिए एक ही बात करें कि किसी भी छोटी बात को तूल न दें। हर बात को हल्का करके जल्दी से जल्दी समाप्त किया करें। कुछ लोगों को आदत होती है बातों को लम्बा खींचने की, वे बातों को समाप्त करते ही नहीं। इससे सबकी खुशी नष्ट होती है। आपसी प्रेम बढ़ाने के लिए सभी को इस नज़र से देखो कि ये सब आत्माएं देवकुल की महान् आत्माएं हैं। घर निर्विघ्न रहे इसके लिए अपने घर में, दुकान में या ऑफिस में 5 बार बाप-दादा का आह्वान करें और यह फील करें कि बाप-दादा आपके घर में आ गये और उनके अंग-अंग से चारो ओर किरणें फैल रही हैं। तीसरी बात - घर में तीन बार दस-दस मिनट बैठकर इस तरह से योग करो कि मैं मास्टर

ज्ञान सूर्य हूँ और ज्ञान सूर्य की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं, फिर वे पूरे घर में फैल रही हैं। ऐसा करना नियम बना लो तो विनाशकाल में भी सुखद अनुभव होंगे।

प्रश्न:- मैंने पवित्रता की प्रतिज्ञा कर ली है, परन्तु अभी भी मुझे अपवित्र स्वप्न आते हैं तथा बुरे संकल्प भी चलते हैं, मैं अपनी पवित्रता से संतुष्ट नहीं हूँ। मेरा संकल्प तो सम्पूर्ण पवित्र बनने का है, उपाय बतायें?

उत्तर:- सम्पूर्ण पवित्रता की यात्रा एक लम्बी यात्रा है। इसके लिए चाहिए लम्बे काल की राजयोग की साधना। अपवित्रता के संस्कार लम्बे काल की तपस्या से ही नष्ट होंगे। यदि ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करके

कोई मनुष्य योग-तपस्या नहीं करता तो ब्रह्मचर्य उसे निराशा ही प्रदान करेगा। इसलिए जिन्होंने ब्रह्मचर्य का तप अपनाया है उन्हें प्रतिदिन 4 घण्टे योग-साधना करनी ही चाहिए तब पवित्रता जीवन का आनंद बन जायेगी। काम वासना को दबाने से वह पुनः स्वप्न व विकल्पों के रूप में जागृत होगी। वासना के कीटाणुओं को नष्ट करना है 'योग-अग्नि' से। तीन तरीकों से ये शक्ति रूपांतरित होती है। राजयोग की साधना से, मनन चिंतन से व कठिन परिश्रम से। यदि ऐसा नहीं तो ये शक्ति विघ्नकारी होगी। साथ में भोजन भी हल्का करें, मिर्च मसाले छोड़ दें। दक्षिण भारत के एक कुमार ने गाय के दूध पर जीवनयापन शुरू किया। 8 मास हो गये होंगे, वह सम्पूर्ण स्वस्थ है और उसकी पवित्रता आनंदकारी है। जरूरी नहीं कि आप भी ऐसा ही करें परन्तु भोजन की स्थूलता पवित्रता में बाधक है। दो काम आप और करें। सवेरे आँख खुलते ही 7 बार संकल्प करें कि मैं पवित्रता का देवता हूँ, मेरी पवित्रता अति सुखकारी है और जब भी पानी या दूध पीयें तो उसे दृष्टि देकर 7 बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, फिर पीयें। विशेषकर सोने से पूर्व यह प्रयोग अवश्य करें तथा भोजन खाते भी व बनाते

भी यही अभ्यास करें इससे आपकी सारी समस्याएं समाप्त हो जायेंगी।

प्रश्न:- ईश्वरीय शक्तियों का कोई चमत्कारिक अनुभव किसी का हो तो हम उसे जानना चाहेंगे।

उत्तर:- एक कुमार कुछ दिन पूर्व ही मेरे पास आया और बताया कि मुझे बहुत समय से गले में तकलीफ थी, मैंने आपको फोन किया था। आपने जो विधि बताई, उससे दो दिन में ही गला ठीक हो गया। विधि थी - पानी को दृष्टि देकर 7 बार संकल्प करना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... फिर इस संकल्प से पीना कि इस पानी को पीने से मेरे गले की तकलीफ ठीक हो जाए। हुआ न बायब्रेशन्स का चमत्कारिक प्रभाव...।

प्रश्न:- मुझे छोटी-छोटी बातों में फीलिंग बहुत आती है, फिर सारा दिन मैं उदास रहती हूँ। यह मेरी बड़ी कमजोरी है, मैं इससे मुक्त होकर शक्तिशाली बनना चाहती हूँ, मैं क्या अभ्यास करूँ?

उत्तर:- फीलिंग सचमुच आधी मृत्यु के समान है। इससे खुशी भी मर जाती है व उमंग-उत्साह भी। आप प्रशंसा की पात्र हैं जो आप इससे मुक्त होना चाहती हैं। यह भी एक तरह की अपवित्रता ही है। लक्ष्य बना लो मुझे 6 मास अच्छी साधना करके स्वयं को फीलिंग के फल से मुक्त होना है। ये संकल्प कभी न करना कि कोई मुझे कुछ कहे नहीं। हम गलती करेंगे तो बड़े तो कुछ कहेंगे ही। इसलिए हल्के रहकर दूसरों की बात या डाँट सुनना है। प्रतिदिन एक अव्यक्त मुरली पढ़कर उसकी 5 बातें लिखनी हैं। प्रतिदिन सवेरे उठते ही ये संकल्प 7 बार करना है "मैं फीलिंग से मुक्त हूँ और मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। 6 मास तक 3 स्वमान प्रतिदिन 25 बार याद करने हैं। 1. मैं एक महान् आत्मा हूँ, 2. मैं विजयी रत्न हूँ, 3. मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। साथ-साथ प्रतिदिन विशेष इसके लिए एक घण्टा योग भी करें। ये सब करने से जीवन से फीलिंग समाप्त हो जायेगी और आप सदा खुश रहने लगेगी। यह भी ध्यान रहे कि फीलिंग आने पर सेवा व भोजन नहीं छोड़ना है। Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

उपलब्ध पुस्तकें



For Cable & DTH
+91 8104777111

TATA Sky 192 airtel 686 videocon 497 RELIANCE 171

"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG: 83°E

DD डायरेक्ट फ्री दूरदर्शन DTH पर GOD TV में और DISH TV पर भी फ्री पीस ऑफ माइंड चैनल शाम 7.30 से रात्रि 10.00 बजे तक देख सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104-777111/9414151111